eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

BOOK REVIEW

अश्वमेध यज्ञ सौर शक्ति के संदोहन की प्रक्रिया

पुनर्मुद्रण लेख – अखण्डज्योति पत्रिका, नवम्बर 1992

दिनांक. 7 - 10 नवंबर 1992 को अखिल विश्व गायत्री परिवार के देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के अंतर्गत प्रथम अश्वमेध यज्ञ जयपुर-राजस्थान में हुआ था। उसी काल में, अखंड ज्योति पत्रिका में वर्ष 1992 के नवंबर माह के पूरे अंक को 'अश्वमेध यज्ञ' को समर्पित किया गया था। यह विशेषांक अपने आप में एक ग्रंथ है, जिसमें शास्त्र को आधार लेकर पिछले मध्यकाल में हुई भ्रांतियों को सुलझाते हुए, अश्वमेध के सही उद्देश्य एवं प्रयोजन को उद्घाटित किया गया है।

सूर्य उपासना भारतीय संस्कृति का मूल रहा है, गायत्री मंत्र, सूर्य-सविता की आराधना का मंत्र है। अश्वमेध यज्ञ का सूर्य-सविता के साथ क्या सम्बन्ध है, वह अश्वमेध यज्ञ के प्रयोग को समझने के लिए जरुरी है।

अश्वमेध प्रक्रिया का गायत्री और सूर्य से गहरा सम्बन्ध है। शतपथ ब्राह्मण के अश्वमेध प्रकरण (13/4/2/6) के अनुसार गायत्री महामंत्र से आहुति देकर सविता की आराधना करने का विधान है। गायत्री महामंत्र की उपासना द्वारा दी जाने वाली आहुतियाँ अश्वमेध की प्रक्रिया के यज्ञ विज्ञान को पूर्ण कराती हैं, जिससे सामाजिक जन-चेतना का परिष्कार होता है। अश्वमेध यज्ञ द्वारा जन-समूह के अचेतन-मन के परिष्कार की इस वैज्ञानिक प्रक्रिया को, नवंबर 1992 अखंड ज्योति - अश्वमेध विशेषांक के लेख, 'अश्वमेध यज्ञ सौर शक्ति के संदोहन की प्रक्रिया', में बहुत ही विद्वतापूर्ण एवं गहराई से बताया गया है। इसलिए 'देव संस्कृति : इंटरडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल' के पाठकों के लिए इस लेख को यहाँ पुनर्मुद्रण किया जा रहा है।

- संपादक

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024
अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा

अगर हम यह जानना चाहें कि सूर्य का मानव जीवन । से क्या सम्बन्ध है ? तो विज्ञान की भौतिक उपलब्धियों को ही देखकर सन्तुष्ट नहीं रह जाना होगा वरन् उस संदर्भ में भारतीय अध्यात्म पर भी विचार करना जरूरी है। पाश्चात्य देशों में उसे जलवायु, वनस्पति और दृश्य जगत् में परिवर्तनों के लिए प्रमुख उत्तरदायी माना जाता है। किन्तु साधना विज्ञान के आचार्यों का मत है कि मनुष्य की भावनाओं का भी सूर्य से घनिष्टतम सम्बन्ध है। गैलीलियो ने इसी सूक्ष्म विज्ञान पर प्रकाश डा–लते हुए कहा था–दिखाई देने वाला सूर्य सम्पूर्ण है ही नहीं। वास्तविक सूर्य तो एक प्रकार की चेतना है, जो सौर मण्डल के प्रत्येक परमाणु में प्रतिभासित है। यही नहीं परमाणुओं में पाए जाने वाले सौर बीज उतने ही शक्तिशाली और समर्थ हैं जितना स्वयं सूर्य । उस समय तो इन बातों की उपेक्षा की गई पर बाद में वैज्ञानिकों ने विस्तृत अध्ययन किया और अब तक जो कुछ जाना गया है, उससे यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मनुष्य पूर्णतया सूर्य पर ही आश्रित है। उससे मानसिक सम्बन्ध स्थापित करके अनेक प्राकृतिक रहस्य और शक्तियाँ प्राप्त करने एवं आत्म विकास में प्रकाश पाने की विस्तृत खोज इस देश में गायत्री विद्या के नाम से हुई।

मनुष्य का शरीर, सूर्य और पृथ्वी के तत्वों के सम्मिश्रण से बना है, इसलिए शारीरिक और मानसिक दृष्टि से शरीर पृथ्वी से ही प्रभावित नहीं होते वरन् उन पर सूर्य का भी प्रचण्ड हस्तक्षेप रहता है। हम यदि शरीर पर विचार करें तो प्रतीत होगा कि अन्न–जल आदि पृथ्वी का रस सेवन करने से हमारे शरीर में आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, लोहा, गन्धक, आदि तत्व उत्पन्न होते हैं, वहीं उसमें इन तत्वों से भी सूक्ष्म प्राण शक्ति–याँ क्रियाशील हैं। प्राण के द्वारा ही हमारे शरीर में स्पन्दन है। छींकना, जम्हाई लेना, निद्रा, पलक झपकाना आदि क्रियाएँ प्राण के द्वारा ही सम्भव हैं। यह क्रियाएँ जड़तत्व नहीं है। प्राण इन सब तत्वों से अधिक सूक्ष्म है। इसलिए वह पहचान में नहीं आता पर गायत्री विज्ञान के द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है।

खगोल शास्त्रियों के मतानुसार सूर्य में मूलतः दो ही तत्व हैं– एक हाइड्रोजन, दूसरा हीलियम । सूर्य हाइड्रोजन का आहार करके उसे हीलियम में बदल देता है। इसी से उसमें शक्ति आती है–ताप व प्रकाश उत्पन्न होता है। यदि यह क्रिया न होती तो सूर्य दिखाई भी न देता, दिखाई केवल उतना हिस्सा देता है, जहाँ यह क्रिया होती है। अन्यथा सूर्य सर्वव्यापी और सर्वा–न्तर्यामी तत्व है। अब चाहे उसे आत्मा कहें, प्राण पुंज कहलें, या हाइड्रोजन का जलता हुआ गोला कह लें। यदि किसी को यह भ्रान्ति हो कि सूर्य आग का जलता हुआ गोला है, तो उसे दूरदर्शी से सूर्य का अध्ययन करना चाहिए। उससे पता चलेगा कि सूर्य में यज्ञ कुण्ड के समान लपटे ही नहीं फूटतीं वरन् उसमें से 'ऊर्जा मैंवर' जो कि प्रकाश गर्मी और विद्युत का सम्मिश्रण है, फूटता रहता है।

कुछ इसी तरह की क्रिया हमारे शरीरों में होती है। विचारों के रूप में इसी तरह की उर्जा हमारे शरीरों में विद्यमान है, यह केवल स्पन्दन जैसी क्रिया है इसलिए दिखाई नहीं देती पर हमारे शरीर को अधिकांश शक्ति इसी तरह अभिव्यक्त होती है। यदि मनुष्य को विभिन्न स्थूल तत्वों वाला प्राणी कहें तो सूर्य को भी उन्हीं शक्तियों का सूक्ष्म गैसीय स्थिति का विचारशील प्राणी मानना पड़ेगा । उसकी शक्ति चूँकि अनन्त और विशाल दण्ड पताका है। वह निरन्तर देता रहता है, इसलिए उन्हें देवता नामक आदर सूचक शब्द से सम्बोधन करने की परम्परा रही है। सूर्य को यदि इस अर्थ में भावनाओं और विचारों की केन्द्रीभूत शक्ति मानकर उसके संदोहन की प्रक्रिया अपनाई जा सके तो किसी के लिए भी उससे शारीरिक, मानसिक, सा–माजिक, औद्योगिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक वरदान प्राप्त कर सकना सम्भव है। गायत्री मंत्र द्वारा इसी विद्या का उद्घाटन पृथ्वी पर किया गया है।

इस महामंत्र के २४ अक्षरों के कम्पन समान तत्वों वाले मनुष्य और सूर्य में मानसिक सम्बन्ध स्थापित करने का काम करते हैं। सूर्य और मनुष्य में तात्विक एकता है।

शास्त्रकार का कथन है– " सूर्य आत्मा जगतस्तस्युषश्च सूर्य जगत की आत्मा है। जबकि हमारी चेतना हमारे शरीर जगत की आत्मा है। इन दो चेतनाओं को अमानगति से कम्पित और सम्बन्ध स्थापित कर सकने की सामर्थ्य उन २४ अक्षरों में है, जिन्हें गायत्री महामंत्र कहते हैं।

यही कारण है कि उपासना के तत्व को जानने वालों ने गायत्री माता का ध्यान सदा उदय कालीन सूर्य मण्डल के मध्य में करने की सलाह दी है।

शास्त्र वचनों के अनुसार– गायत्रीं भावयेद् देवी सूर्यासारकृ–ताश्रयाम् प्रातर्मध्याहने ध्यान कृत्वा जयेत्सुधी ।। –शांकानन्द तरंगिणी ३/४/१

अर्थात् बुद्धिमान मनुष्य को सूर्य के रूप में स्थित गायत्री देवी का प्रातः मध्याह्न और सायं त्रिकाल ध्यान करके जप करना चाहिए।

सूर्य और गायत्री सर्वथा अभेद हैं। इनकी एकता उसी तरह है जैसे अग्नि और ऊष्मा की। इनकी इसी एकता को बताते हुए ऋषि कहते हैं – "नमस्ते सूर्य संकारी सूर्य गायत्रिके ऽमले। ग्रहह्मविद्ये महाविधे वेदमाता नमोऽस्तुते" : हे सूर्य के समान रूपवाली ! हे गायत्री ! हे अमले । आप ब्रह्मविद्या हैं, आप महाविद्या हैं तथा वेद माता हैं। आपको मेरा प्रणाम है। इस महामंत्र की साधना करने वाले में सूर्य शक्ति का प्रवाह आने लगता है। विज्ञान का नियम है कि उच्चतर या अधिक शक्ति का प्रवाह निम्न स्तर अथवा कम शक्ति वाले केन्द्र की ओर तब तक बहता है, जब तक दोनों समान न हो जायें। गायत्री से प्राप्त सिद्धियाँ इसी तादात्म्य की परिपक्व अवस्था ही है। तब मनुष्य इसी भौतिक शरीर में सूर्य चेतना के समान सर्वव्यापी, सर्वदर्शी और सर्व समर्थ हो जाता है। वह न केवल जलवायु, लोगों के स्वास्थ्य, मन की बातें जान लेने की सामर्थ्य पा लेता है, बल्कि इससे भी अधिक सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधियों और शक्तियों का स्वामी हो जाता है। इन सामर्थ्यो की व्यापकता इतनी अधिक है जिसका विवरण कुछ पंक्तियों में दे पाना सम्भव नहीं। उसमें उन्हीं सी करुणा, सद्बुद्धि, परार्थ उत्सर्ग की भावना विकसित होने लगती है। दूसरे शब्दों में गायत्री उपासक उपासना के साथ–साथ अपने सद्गुण, सद विचारों को अधिक से अधिक सत्कर्मों में लगाने लगता है।

कोई व्यक्ति जब शान्त और प्रसन्न हो, उस समय उसके पास भावनापूर्वक निवेदन करने पर उससे आशातीत समर्थन पा सकना सहज सम्भव है। कोई तालाब स्वच्छ और शान्त हो तो उस पर एक छोटा सा कंकड़ फेंककर ही तरंगों का उत्पादन किया जा सकता है। यह भाव और विज्ञान दोनों का मिलाजुला रूप है। भारतीय आचार्यों ने जो आचार संहिताएँ और वैज्ञानिक प्रयोग किए हैं, वह उक्त सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर ही हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने इसी सूक्ष्म दर्शन को दृष्टि में रख समय–समय पर कुछ विलक्षण प्रयोग किए हैं। साधनातत्व के मर्मज्ञों के अनुसार कुछ विशिष्ट अवसरों पर विशिष्ट रीति से गायत्री उपासनाएँ और यज्ञादि प्रक्रियाएँ सम्पन्न की जाएँ तो उनसे सूर्य देव की आध्यात्मिक शक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित एवं आकर्षित किया जा सकता है। उनसे न केवल अपने लिए वरन् सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए सुख–समृद्धि और शान्ति का अनुदान उपलब्ध किया जा सकता है।

अक्टूबर १९५८ का सहस्त्र कुण्डीय यज्ञ एक ऐसा ही प्र–योग था। पीछे मौसम वैज्ञानिकों ने भी इस मान्यता की. पुष्टि

10.36018/dsiij.23.344

कर दी । १ जुलाई १९५७ से ३१ दिसम्बर १९५८ तक खगोल शास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय शांत सूर्य वर्ष (इन्टर नेशनल इयर ऑव क्वापेट सन्) 'इक्वसी मनाया। इन वर्षों में सूर्य बिल्कुल शान्त रहा और वैज्ञानिकों को उस पर अनेक प्रयोग और अध्ययन करने के अवसर मिले। इन्हीं दिनों पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में साधकों ने गायत्री की विशेष साधनाएँ सम्पन्न की और अक्टूबर १९५८ में ४ दिन का यज्ञ कर शरदपूर्णिमा के दिन पूर्णाहुति दी। इस प्रयोग के बाद उनके प्रयोगों की श्रृं–खला मन्द नहीं पड़ी। प्रज्ञा पुरश्चरण सूर्य ध्यान, कल्प साधनाएँ महायज्ञों की देशव्यापी श्रृंखला ऐसे ही अध्ययन और प्रयोग का परिणाम रहे हैं। इनका उद्देश्य उन उपलब्धियों से. सारे विश्व समाज को लाभान्वित कराना है जो ऐसे अवसरों पर देव शक्तियों से सुविधापूर्वक अर्जित की जा सकती हैं।

इन प्रयोगों के साथ ही विश्व गतिविधियों में भारी हेर–फेर उथल–पुथल हुई है। न केवल प्रकृति अपने विधान बदल रही है, बल्कि लोगों की भावनाएँ और विचार भी बदल रहे हैं। पश्चिम जगत की विलासिता प्रिय और भौतिकतावादी जनसमुदाय भी अध्यात्म का आश्रय पाने के लिए आतुर–आकुल है। भारतवर्ष तो विश्व परिवर्तन की धुरी है। इसको केन्द्र बनाकर विश्व परि–वर्तन की जो हलचलें सूक्ष्म जगत में चल रही हैं, उन्हें साधना शक्ति सम्पन्न सहज में देख समझ सकते हैं। इसका प्रत्यक्ष दर्शन १९९९ के बाद सभी कर सकेंगे। अपने दैनिक जीवन में सूर्य की शांत स्थिति प्रातः और सन्ध्या के समय होती है। नवरात्रि भी इसी तथ्य को अपने में संजोए है। इन अवसरों पर साधना करने का विज्ञान–विधान सूर्य की भौतिक प्रकृति की खोज का फल है, जो पूर्णतया विज्ञान सम्मत है।

दीर्घकालीन कालचक्र के अनुसार इन दिनों महाक्रान्ति सम्पन्न होना है। अन्तर्राष्ट्रीय शांत सूर्य वर्ष समिति ने १ जनवरी ६४ से दिसम्बर ६५ तक दूसरा शांत सूर्य वर्ष मनाया है और यह बताया कि सूर्य में कुछ विशेष स्पन्दन (फैक्यूले) उत्पन्न हो रहे हैं। उसके बाद ही सौर कलंक दिखाई देते हैं और उसके कारण पृथ्वी की जलवायु में विशेष हलचल उत्पन्न होती है। यों सौर कलंकों के कारण पृथ्वी में प्राकृतिक परिवर्तनों का क्रम ११ वर्ष बाद आता है। पर महाकाल की योजना के अनुरूप शीघ्रातिशीघ्र विश्व को परिवर्तित कर डालने के उद्देश्य से यह क्रम अस्त–व्यस्त हो गया है। इस अस्त–व्यस्तता के परिणाम अतिवृष्टि अनावृष्टि, युद्ध महामारियों के रूप में आएँगे। इन प्रकोपों से उन्हीं की रक्षा होगी जो सूर्य शक्ति से सम्बन्ध जोड़े रहेंगे ।

भारत वर्ष को गुलामी के बन्धन में लगभग १५०० वर्ष जकड़े रहना पड़ा। इसके दुष्प्रभाव अभी भी हैं। गायत्रीतत्व के मर्मज्ञों के अनुसार इन दुष्प्रभावों का अन्त इसी सदी के साथ हो जाएगा। ग्रहगणित के अनुसार पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में नौ करोड़ तीस लाख मील की यात्रा करनी पड़ती है। इस यात्रा को पृथ्वी लगभग ६७ हजार मील प्रति घण्टा की गति से चलकर ३६५२५ दिनों में पूरा करती है। प्रत्येक चक्कर में १/४ दिन बढ़ जाता है। एक नया पूरा वर्ष होकर पृथ्वी को पुनः उसी कक्षा में आने के लिए ३६५२५५४–१४६१ वर्ष लग जाते।

इन १४६१ वर्षों का क्रम इसी शताब्दी के अन्त में पूरा होने को है । इस बीच सूर्य की प्रचण्ड शक्तियों का पृथ्वी पर आविर्भाव होगा और उनसे वह तमाम शक्तियाँ नष्ट भ्रष्ट हो जाएँगी जो मानसिक दृष्टि से अध्यात्मवादी न होंगी । गायत्री उपासक इन परिवर्तनों को कौतूहलपूर्वक देखेंगे और उन कठिनाइयों में भी स्थिर बुद्धि बने रहने का साहस उसी प्रकार प्राप्त करेंगे जिस प्रकार माँ का प्यारा बच्चा माता के कुद्ध होने पर भी उससे भयभीत नहीं होता वरन् अपनी प्रार्थना से उसे शान्त कर लेता है।

इन दिनों प्रारम्भ की गई भारत भूमि व पूरे विश्व में संपन्न होने वाली अश्वमेध महायज्ञ की योजना पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से प्रारम्भ किया गया विलक्षण प्रयोग है। इसे १९५८ में हुए सहस्रकुण्डीय महायज्ञ का संशोधित परिवर्तित संस्करण कहा जा सकता है। अश्वमेध प्रक्रिया का गायत्री और सूर्य से गहरा सम्बन्ध है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार– सविता वै प्रसविता सविता म इमं यज्ञं प्रसुवादिति । – शतपथ १३/४/२/६ अश्वमेध प्रकरण –अर्थात् सविता प्रेरक है सविता मेरे इस यश की प्रेरणा करे। इसी प्रकार गायत्र्ये जुहोति कहकर गायत्री महामंत्र से आहुति देने का विधान है। इस प्रक्रिया द्वारा निश्चित रूप से मानव जाति को सूर्य शक्ति से जोड़कर समूचे विश्व को अनेकानेक अनुदानों वरदानों से लाभान्वित किया जा सकेगा।

अन्तरिक्ष किरणों उत्तरी ज्योति, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षे–त्र आयनोस्फियर पर सूर्य के प्रभावों का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने यह बताया कि सूर्य अपने–आप उत्ते–जित होता रहता है। उत्तेजित सूर्य अपने सौरमण्डल, (पृथ्वी सहित) का मन्थन करता है। उस समय उससे ज्वालाएँ फू–टती और सूक्ष्मकणों की वर्षा होती है। यह कण बाद में कहाँ विलीन हो जाते हैं, यह पता तो बैज्ञानिक नहीं लगा पाए; पर आत्मविद्या के आचार्यों के अनुसार सृष्टि के प्रत्येक अणु–अणु में यह उत्तेजित कण ही हलचल पैदा करते हैं। उससे स्थूल प्रकृति ही नहीं मनुष्य की 'सूक्ष्म प्रकृति भी प्रभावित होती है। विचार, भावनाएँ संकल्प और विश्वास भी परिव–र्तित होते हैं, इस परिवर्तन का आकलन यद्यपि वैज्ञानिकों के बूते का नहीं है लेकिन सामूहिक रूप से विश्व की राजनीति, उद्योग, व्यापार, रोजगार, युद्ध और सामाजिक गतिविधियों पर उसके प्रभाव को देखकर वस्तुस्थिति को समझा जा सकता है।

साधना गम्य इन रहस्यों की जो अनुभूति कर सकेंगे उन्हें अश्वमेध प्रक्रिया के प्रयोजन और सत्परिणाम अविदित नहीं रहेंगे। वे तेजी से गायत्री विद्या के अन्तराल में प्रविष्ट होगे। अपना ज्ञानार्जन और संयम में उनकी वृत्ति किसी से कम नहीं होगी। ऐसे लोग ही आगे चलकर विश्व का मार्गदर्शन करेंगे।

गायत्रीतत्व मर्मज्ञों के अनुसार विश्व रचना में दो ही तत्व हैं देव या प्राण, भूत या पदार्थ । प्राण के बिना पदार्थ गति–शील नहीं होता। पंचभूतों से बना मनुष्य का शरीर गायत्री का शब्द भाग है। जिस तरह उच्चारण के बाद गायत्री के अक्षर वायु में विलीन हो जाते हैं। उसी तरह मनुष्य शरीर भी उत्पन्न होकर विलीन हो जाता है। उसका दूसरा चरण प्राप सविता का अधिष्ठान है। उसका दृश्य भाग भौतिक होने पर भी अदृश्य मनोमय है। इस रूप में सूर्य सर्वाधिक शक्तिशाली है। ऋषियों ने सूर्य को त्रयी विद्या कहा है। अर्थात् उसमें स्थूल तत्व (जिसमें शरीर बनते हैं) प्राण (जिनसे चेतना आती है) और मन (जो चेष्टाएँ करता है) तीनों तत्व विद्यमान हैं। गायत्री मंत्र साधना के माध्यम से जब सूर्य के साथ स्वयं को जोड़ते हैं तो हमें उसके आध्यात्मिक लाभ–स्वास्थ्य, तेजस्विता, मनस्विता के रूप में मिलते हैं। अश्वमेध प्रक्रिया का एक महान प्रयोजन मानव समाज को इस विद्या का ठीक–ठीक ज्ञान देना है। ताकि धरती पर सुख–शान्ति और समृद्धि का कोई अभाव न रहे। युग परिवर्तन की इस सन्धि और संक्रान्ति अवस्था में उन लोगों को अधिक श्रेय सम्मान मिलेगा, जो इस तत्व ज्ञान का अवगाहन कर सारे विश्व में इस आलोक को फैलाने का प्रयत्न करेंगे।

सन्दर्भ

[1] माता भगवती देवी शर्मा (संपादक)। अश्वमेध यज्ञ सौर शक्ति के संदोहन की प्रक्रिया। अखंड ज्योति पत्रिका, 1992;55:11(25)।

10.36018/dsiij.23.344